दिल के जज़्बात

(Dil Ke Jazbaat)

(कुछ शब्दों के साथ)

काव्य संग्रह

- दीपक कुमार मलैया

आवाज़ ना बोल सकती जो,
जज़्बात वो बोल जाते हैं.. ।
आँखों से बयान हो जाता है,
जुबान से जो ना हम बोल पाते हैं.. ।

दिल के जज़्बात

(Dil Ke Jazbaat)

(कुछ शब्दों के साथ)

काव्य संग्रह

- दीपक कुमार मलैया

आवाज़ ना बोल सकती जो,
जज़्बात वो बोल जाते हैं..।
आँखों से बयान हो जाता है,
ज़ुबान से जो ना हम बोल पाते हैं..।

लेखक का परिचय

प्रिय मित्रों तथा सभी सम्मानित बड़ों को प्यार भरा नमस्कार,

मेरा नाम दीपक कुमार मलैया है और पेशेवर रूप से मैं एक इंजीनियर हूँ। यह मेरी पहली पुस्तक है जिसे मैं प्रकाशित कर रहा हूँ। वैसे तो बचपन से ही मुझे लिखना पसंद था लेकिन मैंने कभी यह नहीं सोचा था कि मैं एक किताब लिखूंगा और उसे प्रकाशित करूँगा। यह ईश्वर की कृपा और बड़ों का आशीर्वाद है जो मैंने यह किताब लिखी है और इसे प्रकाशित कर रहा हूँ।

समर्पण के दो शब्द

मेरा यह काव्य संग्रह "दिल के जज़्बात (कुछ शब्दों के साथ)" मेरे सम्मानित माता-पिता और बड़ों और मेरे सभी प्यारे परिवार के सदस्यों, दोस्तों और उन व्यक्तियों को समर्पित है जो मेरे दिल के बहुत करीब हैं। इस पुस्तक में प्रकाशित कविताएँ मेरे जीवन के अनुभव और भावनाओं से प्रेरित हैं, जिन्हें मैंने कविता का रूप देने की कोशिश की है। उम्मीद है की यह काव्य संग्रह आपको पसंद आएगा और आप अपने स्नेह से मुझे आगे और कविताएँ लिखने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। एक बार फिर में आप सब का तहे दिल से धन्यवाद करना चाहूंगा।

लेखक की कलम से:

लोग कहते हैं की ‘प्यार में एक व्यक्ति’ और ‘टूटे हुए दिल वाला व्यक्ति’ कवि बन जाता है। यह सच है, बल्कि यह कहना ज़्यादा सही होगा की एक व्यक्ति जो सच्चे दिल से कुछ महसूस कर सकता है वह उस विषय के बारे में अधिक अच्छा लिख सकता है जिसे वह लिखना चाहता है। लेखन केवल एक पृष्ठ पर शब्दों का उल्लेख नहीं है, बल्कि यह एक भावना है, एक कवि की भावनाएं जो वह एक पृष्ठ पर लिखता है। कभी-कभी कुछ भावनाओं के लिए शब्दों को ढूंढना और उन्हें लिखना बहुत मुश्किल होता है। लेकिन फिर भी कवि इसे व्यक्त करते हैं और लिखते हैं। कुछ बातें वह भावनाएं जो मैंने अपने जीवन में महसूस की, उन्हें शब्द देने की कोशिश की है और इस काव्य संग्रह में ढालने की कोशिश की है।

इस दुनिया में हर व्यक्ति में भावनाएँ होती हैं। एक कवि या कलाकार अपनी प्रिय रचनाओं को प्रकाशित करते हुए और उसे दुनिया के साथ साझा करते हुए, उजागर करता है और चाहता है कि पाठक और एक दर्शक उसे उसी भाव के साथ पढ़े जिसके साथ वह लिखा या रचा गया था। एक उदाहरण के रूप में: एक ध्वनि संकेत (Sound Signal) पर विचार करें, जब यह एक छोर पर एनकोड किया जाता है और फिर दूसरे छोर पर संचारित (Transmit) होता है, फिर डिकोडर की तरफ से अगर इसे एक ही आवृत्ति (frequency) और गुणवत्ता (Quality) के साथ डिकोड किया जाता है तो हमें आउटपुट पर ध्वनि की बेहतर गुणवत्ता (Quality) प्राप्त होती है। भावनाओं को साझा करते समय भी कुछ ऐसा ही होता है।

आशा है कि आप इन कविताओं का आनंद उन्हीं भावनाओं के साथ लेंगे जिन भावनाओं के साथ ये लिखीं गईं हैं। इन कविताओं को पढ़ने तथा अपना कीमती समय देने के लिए सभी पाठकों को धन्यवाद।

- दीपक कुमार मलैया

कविता-सूची

प्यारी माँ
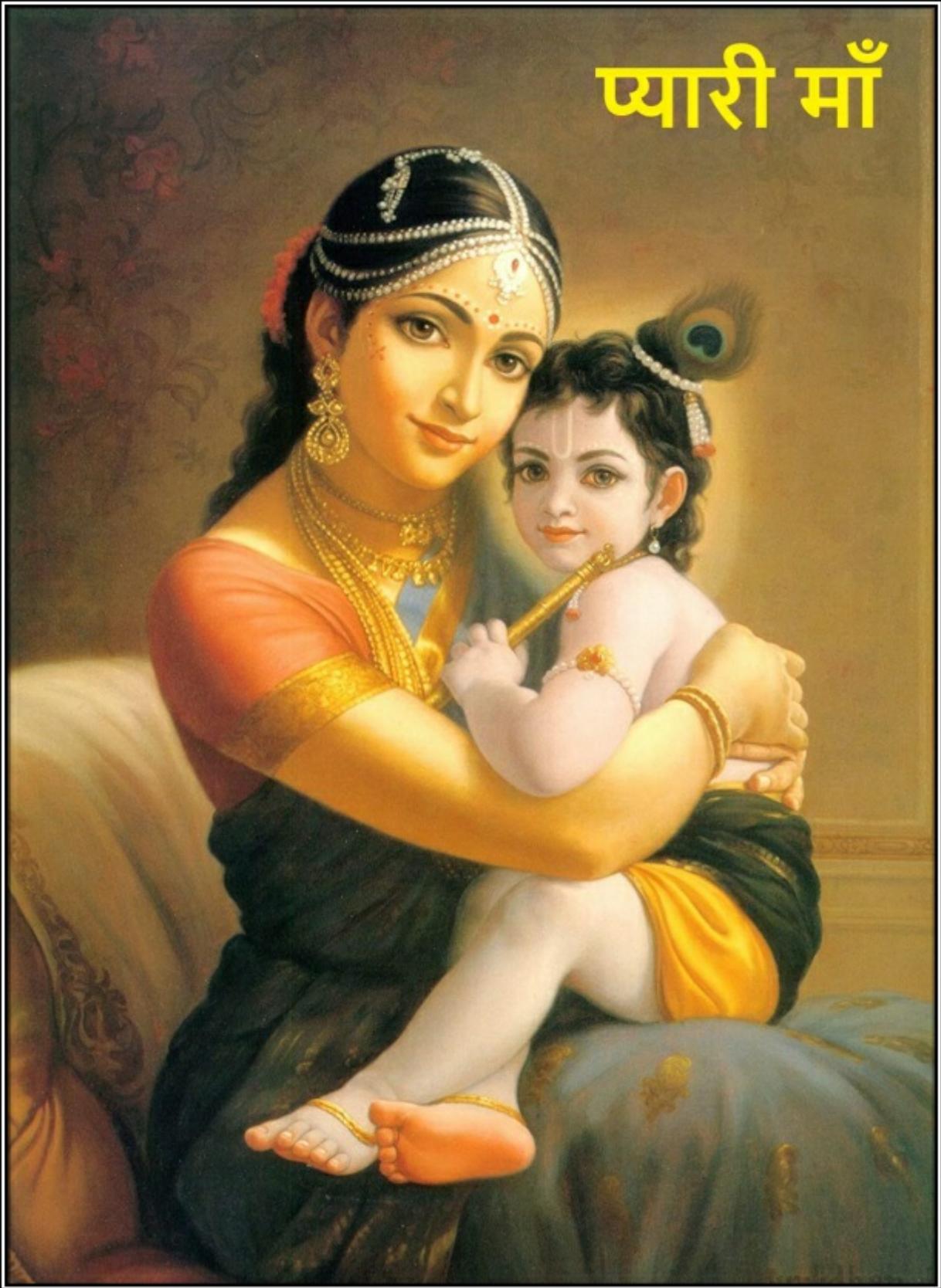
प्यारी माँ

कोई कहे माँ कोई मम्मी,
तो किसी के लिए आई है....।
कहने में है छोटा शब्द,
पर सारी दुनिया इसमें ही समाई है....।
प्यार का है ये समंदर,
और ममता की परछाई है....।
इसकी मूर्त एसी,
की सबकी ज़िंदगी खुशियों से सजाई है....।
दिन में भागी रात में जागी,
बच्चों के पीछे अपनी नींद गंवाई है....।
खुद सहे दुनिया के हर गम,
हमारे लिए खुशियों की झड़ी लगाई है....।
पेट भरकर हमारा,
पानी से अपनी भूख मिटाई है....।
हर संकट में हमारे,
ढाल बनकर सुरक्षा की दीवार बनाई है....।
तकलीफ में हों अगर हम कभी,
तो नींद कभी उसे ना आई है....।
हे ईश्वर तूने,
ममता भी क्या चीज़ बनाई है....।
अपनी चिंता ना करे कभी,
जान अपनी बच्चों में बसाई है....।

हमारे अरमान सारे पूरे किए,
और खुद की ख्वाईश हमेशा ही दबाई है....।
आंखों में हों आंसू हमारे,
तो दर्द से सदा वो तिलमिलाई है....।
सोचा है क्या तुमने कभी,
या दिल से कभी ये आवाज़ आई है....।
माँ के चरणों में ही है जन्नत,
कभी इन पर खुशियां तुमने लुटाई है....।
इस जग में काटी घड़ियाँ जितनी,
उससे ज्यादा माँ के साथ बितायीं हैं....।
बिन बोले हमारे कुछ भी,
हमें माँ ही तो समझ पाई है....।
हे ईश्वर इस जहान की सबसे प्यारी चीज़,
तूने माँ ही तो बनाई है....।

◆ ◆ ◆

प्यारे पापा

प्यारे पापा

माँ पे कितने गाने बनते, ओर कविताएँ भी सब लिखते हैं।
पापा भी तो हमें प्यार करते, फिर विचारों में क्यों कम दिखते हैं।
आज कुछ उनके लिए कहना चाहता हूं,
कुछ पंक्तियाँ पापाओं के नाम करना चाहता हूं।

माँ के साथ बिताया वक्त हमने,
पापा ने भी तो हमें घुमाया है....।
माना माँ ने खिलाया हमको,
पर पापा ने भी तो हमें हंसाया है....।
माँ की गोद में सोए हैं हम,
पर पापा ने भी तो थपथपाया है....।
माँ ने लोरियां सुनाई हमेको,
पर पापा ने भी तो हमें सुलाया है....।
लड़खड़ाते थे जब कदम हमारे,
उंगली पकड़ कर हमें चलना सिखाया है....।
ज़िन्दगी की हर कशमकश में,
सही रास्ता भी हमें दिखाया है....।
थक जाते थे जब कदम हमारे,
तो अपने कन्धों पे बैठाया है....।
हमारी एक हंसी के लिए,
घोड़ा बनकर सारे घर में हमें घुमाया है....।
सबको रखा दूर हर ग़म से,
पर अपना दर्द सबसे छुपाया है....।
दुनिया का हर बोझ उठाया अकेले,

पर अपना ज़ख्म नहीं बताया है....।
पूरी करते हर ख्वाइश सबकी,
पर अपनी ही ईच्छाओं को दबाया है....।
इस घर को खुशहाल,
मम्मी-पापा ने ही तो बनाया है....।
आए अगर कभी कोई मुश्किल,
तो ढाल बनकर हमारी रहते हैं....।
सहते हैं सब कुछ अकेले ही,
पर कभी किसी से कुछ ना कहते हैं....।
ठोकर लगे अगर कोई हमें,
तो सहारा बनकर हमें थामते हैं....।
कैसी भी हो परिस्थितियां,
पर खुशियां हम पर बिखराते हैं....।
उनके प्यार की क़ीमत हम,
ज़िन्दगी भर चूका नहीं सकते हैं....।
देकर थोड़ा वक्त अपना हम,
उनको खुशियां थोड़ी दे सकते हैं....।
कर्ज उनका चूका नहीं सकते हम,
पर फ़र्ज़ तो निभा ही सकते हैं....।
खो जाते हैं हम इस दुनिया की भीड़ में,
"I Love You पापा" जाने क्यों नहीं कह पाते हैं....।
माँ दिल हैं तो पापा धड़कन हैं,
इन दोनों से ही तो हमारा जीवन है....।
माँ फूल हैं तो पापा खुशबू हैं,
रहें हमेशा साथ बस यही आरज़ू है....।
माँ चाँद हैं तो पापा चाँदनी हैं,
इन दोनों से ही तो छाई ज़िन्दगी में रौशनी है....।
माँ नींद हैं तो पापा उसमें बसे ख़्वाब हैं,

पाकर इनको लगता जैसे मिल गया कोई ख़िताब है....।
पापा मेरे सारी दुनिया से लाजवाब हैं।

◆ ◆ ◆

बचपन के वो दिन
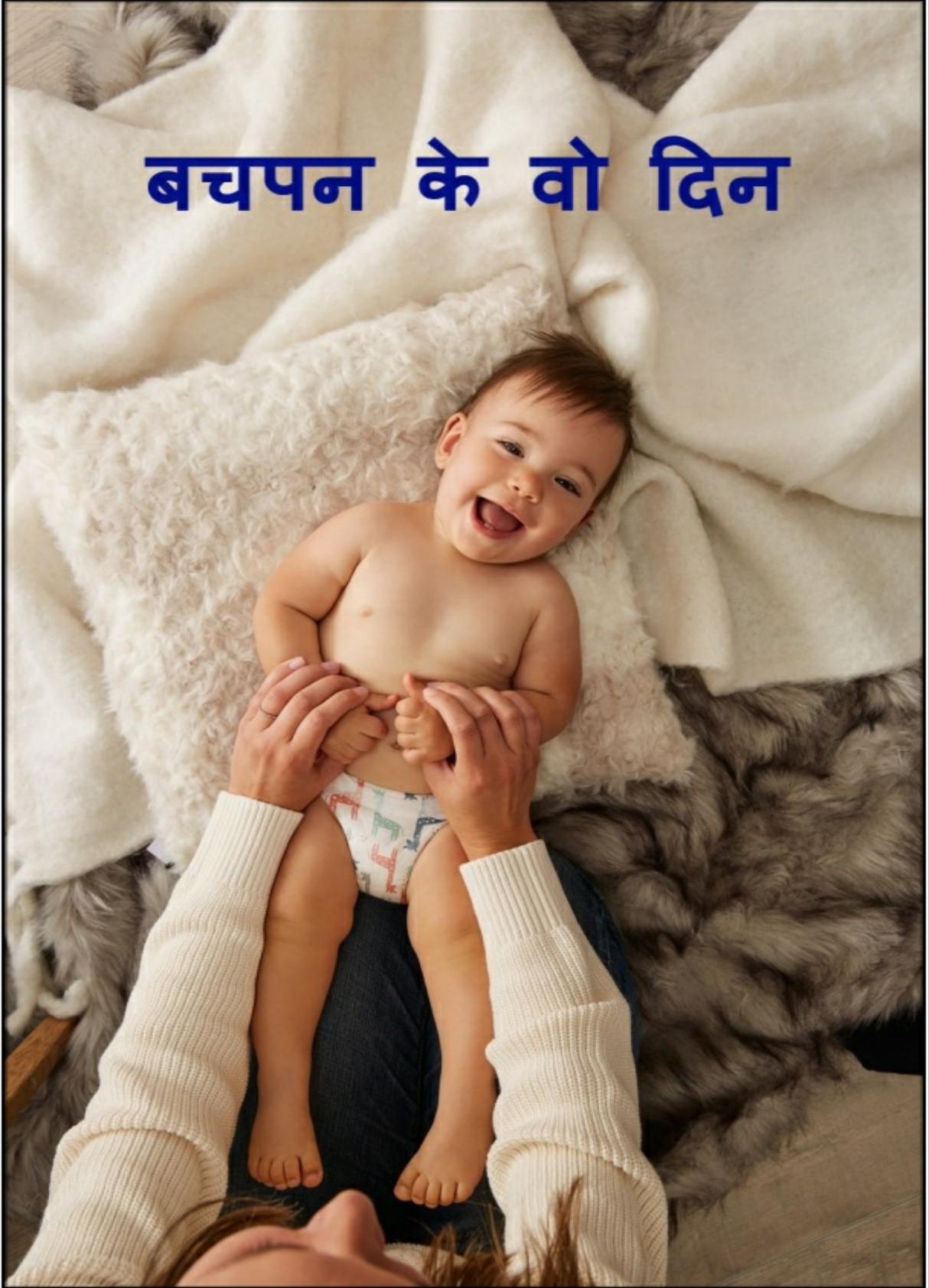
बचपन के वो दिन

वो हसीन लम्हे बचपन के,
जब भी याद आते हैं....।
दिल में सुकून और चेहरे पे,
प्यारी सी मुस्कान लाते हैं....।
लगता है जैसे कल की हो बात,
उन जज़्बातों में हम खो जाते हैं....।
बचपन के वो दिन,
याद बहुत ही आते हैं....।
वो खिलखिलाकर हँसना,
जिसे देख माता-पिता खिल जाते थे....।
उंगली पकड़ा कर अपनी,
वो चलना हमें सिखाते थे....।
चलते-चलते हम गिरते थे,
और गिर कर खुद ही संभलते थे....।
अब लड़खड़ाते हैं कदम दुनिया की भीड़ में,
और चाह कर भी संभल नहीं पाते हैं....।
बचपन के वो दिन,
याद बहुत ही आते हैं....।
वो माँ के हाथों से खाना,
और सारे घर में उसे भगाते थे....।
अपनी नटखट हर्कतों से हम,
सब को बड़ा सताते थे....।
कहानियां सुन कर परीयों की,

माँ के आंचल में ही सो जाते थे....।
अब तो ऐसी नींद कहाँ,
अब सपनों से ही डर जाते हैं....।
बचपन के वो दिन,
याद बहुत ही आते हैं....।
वो प्यारी शरारतें मेरी,
जिसे देख सभी प्यार से मुस्काते थे....।
करते थे फिर प्यार की बारिश,
और गालों को सहलाते थे....।
वो बात बात पे मेरा मचलना,
फिर ज़िद पे भी अड़ जाते थे....।
अब तो कितनी ख्वाईशें ऐसी,
जिन्हें पुरा भी नहीं कर पाते हैं....।
बचपन के वो दिन,
याद बहुत ही आते हैं....।
छुट्टीयों में नानी के घर जाना,
और वहां बर्फ के गोले खाते थे....।
देर रात तक सभी मिलकर,
अंताक्षरीयों के गीत गाते थे....।
भूल के सारी चिंताओं को,
बेफिक्र हो कर मज़े उठाते थे....।
अब लगे ज़िम्मेदारीयां उठाने में,
खुद के लिए वक्त भी कहां हम पाते हैं....।
बचपन के वो दिन,
याद बहुत ही आते हैं....।

◆ ◆ ◆
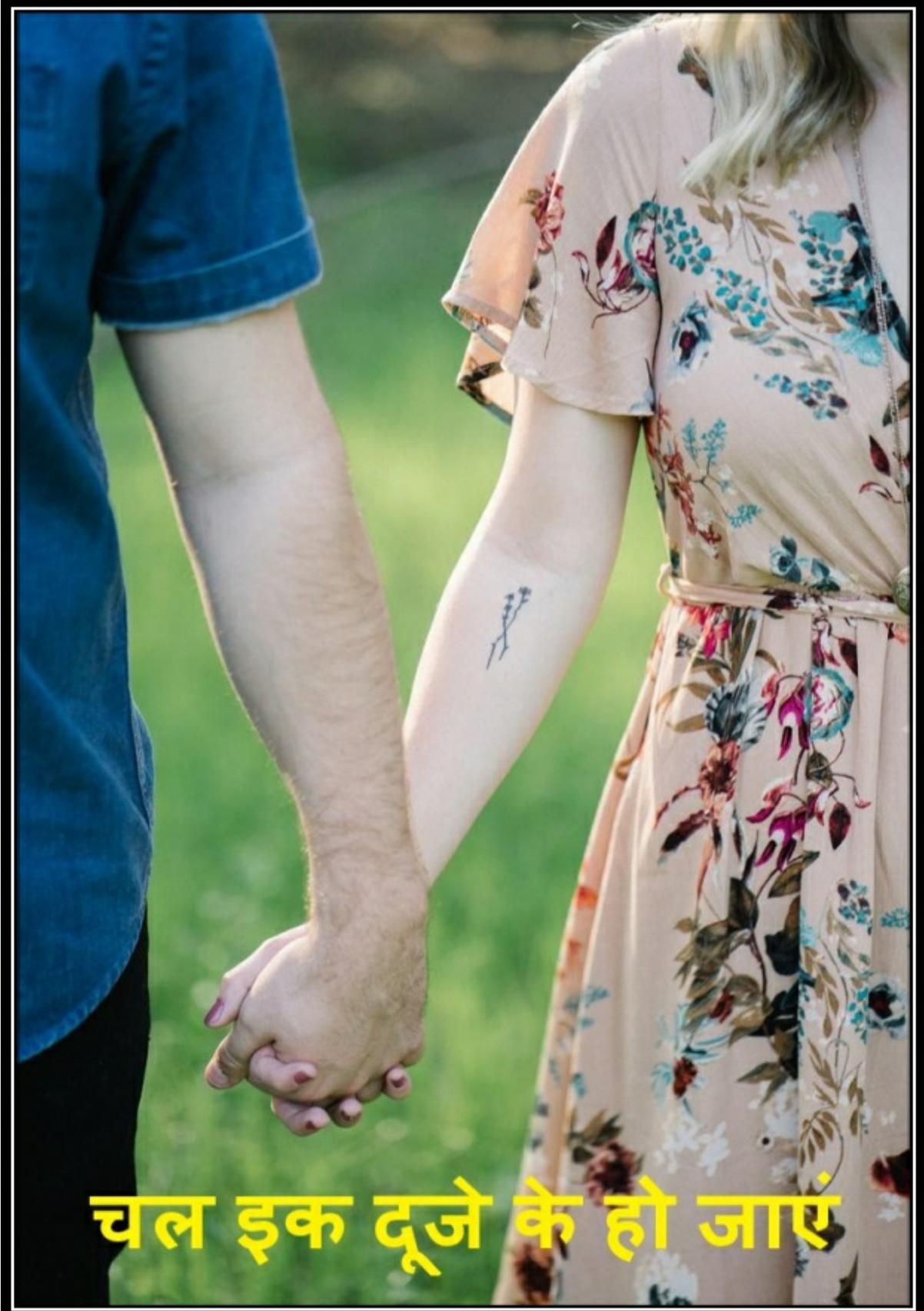
चल इक दूजे के हो जाएं

चल इक दूजे के हो जाएं

रिश्तों की इन उलझनों में,
कहीं प्यार हमारा ना खो जाए....।
है यकीन अगर मुझ पर,
तो चल इक दूजे के हो जाएं....।
सारी दुनिया से दूर,
इक आशियाना ऐसा बनाएं....।
बस तू हो और मैं होऊं,
और कोई वहां ना आने पाए....।
है यकीन अगर मुझ पर,
तो चल इक दूजे के हो जाएं....।
जान तुझी पर निसार करुं,
तुझे मैं बेतहाशा प्यार करुं....।
सारी दुनिया से छुपा के रखूं,
तुझे किसी की नज़र ना लगने पाए....।
है यकीन अगर मुझ पर,
तो चल इक दूजे के हो जाएं....।
तू दिल है मैं तेरी धड़कन,
मैं इत्र तो तुझे खुशबू कहूं....।
ज़िन्दगी भर मैं तेरी परछाई बनकर साथ रहूँ,
कभी मुश्किलें तुझे छूने ना पाएं....।
है यकीन अगर मुझ पर,
तो चल इक दूजे के हो जाएं....।

प्यार मुश्किलों से मिलता है

प्यार मुश्किलों से मिलता है

दिल में होती फिक्र जहां,
और होता बस उन्हीं का ख़याल है....।
विश्वास भी होता केवल उन्हीं पे,
और आंखों में भी उन्हीं का इन्तज़ार है....।
दो दिलों का मेल होता है ये,
शायद इसे ही तो हम कहते प्यार हैं....।
जैसे फूल ग्रीष्म में,
आसानी से नहीं खिलता है....।
आसान नहीं होता इसे पाना,
प्यार मुश्किलों से मिलता है....।
प्यार किया नहीं जाता,
ये तो बस हो जाता है....।
रहते हैं जागे-जागे हम,
पर ये दिल कहीं खो जाता है....।
ये चाहता है बस उनकी खुशियां,
खुद को तो भूल जात है....।
दो कदम का साथ नहीं है ये,
प्यार ज़िन्दगी भर साथ चलता है....।
आसान नहीं होता इसे पाना,
प्यार मुश्किलों से मिलता है....।
ना भूख लगे, ना प्यास लगे,
और ना ही लगता कहीं भी ये मन है....।

बड़ा प्यारा एहसास लगता है,
लगता उसी में हमें सारा जीवन है....।
लगती तन्हा-तन्हा सी ज़िन्दगी,
पर उनके आने से जीवन खिलता है....।
भूल जाते हैं सारी मुश्किलें और परेशानियां,
सुकून उन्हीं की बाहों में मिलता है....।
आसान नहीं होता इसे पाना,
प्यार मुश्किलों से मिलता है....।
अरमान है इस दिल का,
उनके चेहरे पे मुस्कान सजाना है....।
करें प्यार भी बेशुमार,
उन्हें ज़िन्दगी भर के लिए अपना बनाना है....।
खुशियां ही खुशियां हों उनके दामन में,
और उनके सारे दुख अपनाना है....।
शिद्दत से चाहो अगर कुछ,
तो ईश्वर भी साथ चलता है....।
किस्मत चाहे बदले ना बदले,
पर वक्त ज़रूर बदलता है....।
आसान नहीं होता इसे पाना,
प्यार मुश्किलों से मिलता है....।

◆ ◆ ◆

दिवाली कुछ ऐसे मनाएं
HAPPY DIWALI

दिवाली कुछ ऐसे मनाएं

आई दिवाली खुशियों वाली,
आओ इसे कुछ ऐसे सजाएं....।
ना रहे ग़मों का अंधेरा कहीं,
आओ हर जगह खुशियों के दीप जलाएं....।
बांटें प्यार जग में इतना,
हर जगह प्यार ही प्यार टिमटिमाए....।
कुछ ख्वाईशें औरों की पुरी करें,
और कुछ सपने अपने सजाएं....।
आओ इस बार,
ये दिवाली कुछ ऐसे मनाएं....।
किसी के दिलों में कोई दूरी ना रहे,
आओ हर गिले-शिकवे मिटाएं....।
रोक रहा दिल गर किसी को अपनाने से,
आओ दिल को थोड़ा सा समझाएं....।
मुश्किल कुछ भी नहीं दुनिया में,
आओ ज़िन्दगी को आसान बनाएं....।
भूल के अपने सारे ग़म,
आओ ज़िन्दगी को एक नई राह दिखाएं....।
आओ इस बार,
ये दिवाली कुछ ऐसे मनाएं....।
करते हैं इस बार कुछ ऐसा,
आओ कुदरत को प्रदुषण से बचाएं....।

पटाखों को त्याग कर,
आओ मिठाईयों से रिश्तों को मीठा बनाएं....।
कुछ नई शुरुआत हम करें,
और कुछ लोगों को भी समझाएं....।
स्वच्छ रख कर देश को अपने,
आओ स्वर्ग से भी सुन्दर बनाएं....।
आओ इस बार,
ये दिवाली कुछ ऐसे मनाएं....।
लोग हैं दुनिया में कुछ ऐसे भी,
जो चाह कर अपने अरमान ना पूरे कर पाऐं....।
हो सके तो आओ मिलकर,
उनकी ज़िंदगी में थोड़ी सी खुशियां लाएं....।
इस दिवाली करें कुछ ऐसा,
कोई भूखा ना सोने पाए....।
बाटें हर तरफ खुशियां इतनी,
की दुनिया प्यार से ही जगमगाए....।
आओ इस बार,
ये दिवाली कुछ ऐसे मनाएं....।

**शुभ दीपावली, स्वच्छ दीपावली, सुरक्षित दीपावली **

◆ ◆ ◆

साथ रहें कुछ ऐसे हम तुम

साथ रहें कुछ ऐसे हम तुम

एक आरज़ू तेरे संग जीने की,
साथ रह कर तुझे प्यार करने की....।
रहें साथ कुछ ऐसे हम तुम,
एक दूजे में हो जाएं जैसे गुम....।
मुझे जन्मों के लिए अपना ले,
अपने होंठों की मुस्कान बना ले....।
बना के सिंदूर,
अपनी मांग में सजा ले....।
माथे का टीका बना के,
मुझे तू अपने बालों में लगा ले....।
सजें तेरे कानों में बन के हम बालि,
लब बनकर हम चुराऐं तेरे होंठों की लाली....।
बना के अपनी आंखों का काजल सजा ले,
हार बनाकर मेरी बाँहों का मुझे तू अपने गले से लगा ले....।
खनकें चूड़ी बनकर तेरे हाथों में,
अंगुठी बनकर सजें उंगलियों में....।
पायल बनकर लिपटें तेरे पैरों में,
करधनी बनकर सजें तेरी कमर में....।
ना टूटे कभी ज़िन्दगी में,
चल कुछ ऐसा रिश्ता बना लें....।
कुछ प्यार भरे सपने,
आ साथ मिलकर सजा लें....।

हो जाएं इक दूजे के ऐसे,
एक दिल और धड़कन हों जैसे....।
इक दूजे से बिछड़ें ना कभी हम,
साथ मिलकर बिताएं अपना सारा जीवन....।
इक दूजे की सांसों में समाएं,
चल दो जिस्म एक जान बन जाएं....।
तू मिल जाए तो ज़िन्दगी से और कुछ ना चाहें,
तेरे संग एक नई दुनिया बसाएं....।
यही है आरज़ू यही है ख़्वाब मेरा,
तू बन जाए मेरी और मैं बन जाउं बस तेरा....।

◆ ◆ ◆
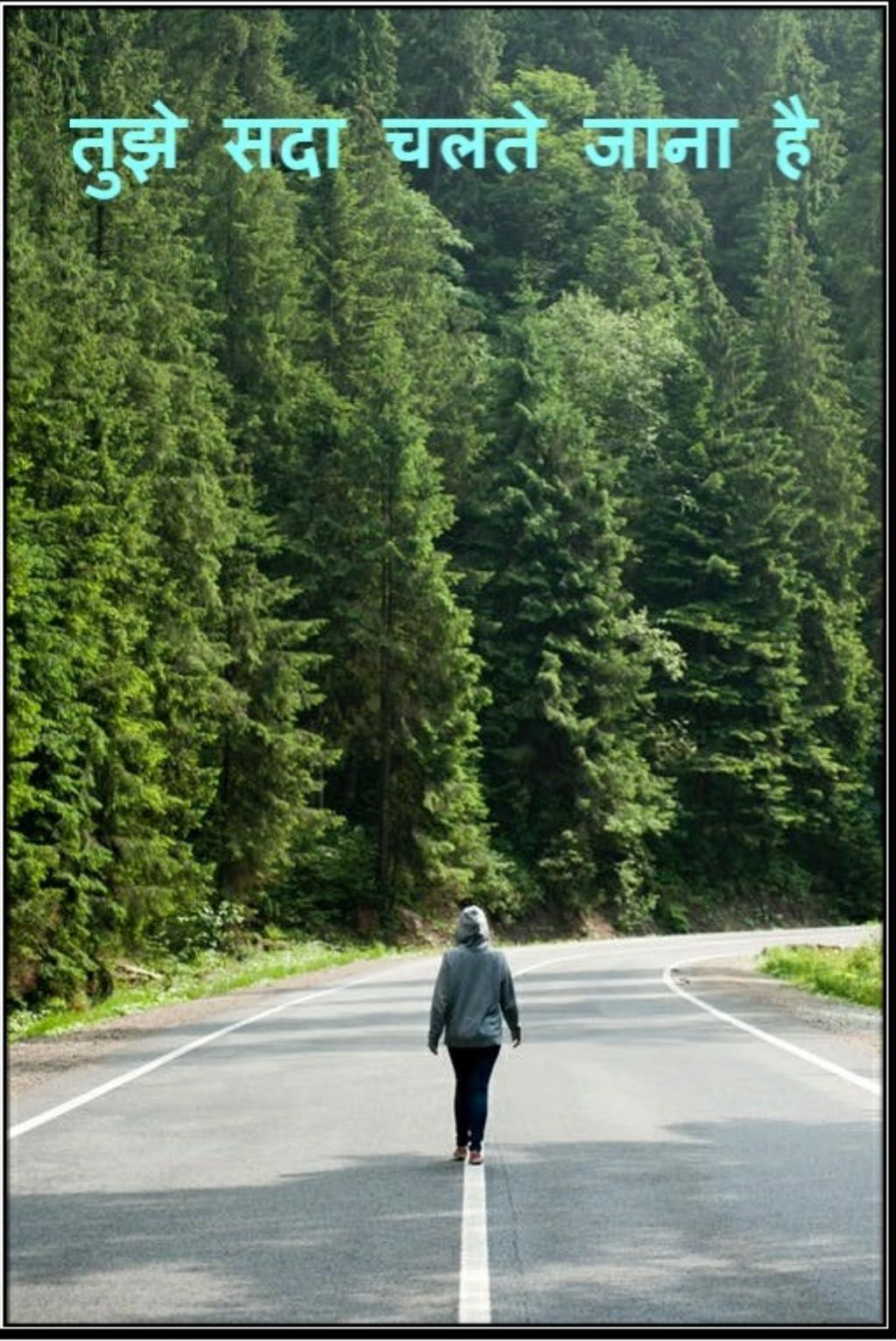
तुझे सदा चलते जाना है

तुझे सदा चलते जाना है

ऐ मुसाफिर तू आगे बढ़,
तुझे सदा चलते जाना है....।
आंधी आए चाहे तूफान आए,
मंज़िल को तो पाना है....।
रुकना नहीं कभी झुकना नहीं,
खुद को मज़बूत बनाना है....।
अकेला भी तू कमजोर नहीं,
ये दुनिया को दिखाना है....।
ऐ मुसाफिर तू आगे बढ़,
तुझे सदा चलते जाना है....।
राह में आएंगे कांटे बहुत ही,
कटों को भी फूल बनाना है....।
हौसलों के हथियार से,
हर मुश्किलों को हराना है....।
कोई साथ ना हो तो गम ना कर,
खुद को ही साथी बनाना है....।
इस ज़िन्दगी का कोई प्यारा नहीं,
इसे छोड़ के सबको एक दिन जाना है....।
ऐ मुसाफिर तू आगे बढ़,
तुझे सदा चलते जाना है....।
रास्ता बोहोत कठिन सच्चाई का,
पर तुझे इसे ही अपनाना है....।

अपनी अच्छाई की ताकत से,
हर बुराई को भी हराना है....।
दुनिया याद रखे तुझे हमेशा,
कुछ ऐसा भी काम कराना है....।
फिर हंस्ते-हंस्ते एक दिन,
इस दुनिया से चले जाना है....।
ऐ मुसाफिर तू आगे बढ़,
तुझे सदा चलते जाना है....।

◆ ◆ ◆

ढूंढ ने पर भी नज़र ना आएंगे

ढूंढ ने पर भी नज़र ना आएंगे

इक दिन हम इतने दूर चले जाएंगे,
मिलना चाहोगे पर मिल ना पाएंगे....।
हो जाएंगे दूर तुमसे इतना,
ढूंढने पर भी नज़र ना आएंगे....।
शिद्दत से चाहोगे तो महसूस करोगे,
पर इन आंखों से मुझे ना देख सकोगे....।
सपनों में तुम्हारे हम रोज़ आएंगे,
दिल में तुम्हारे अपने प्यार का एहसास जगाऐंगे....।
हो जाएंगे दूर तुमसे इतना,
ढूंढने पर भी नज़र ना आएंगे....।
तेरे सिवा ना किसी पे ऐतबार करेंगे,
धड़कन बनकर तेरी हमेशा तेरे साथ रहेंगे....।
बोहोत याद तुम्हें आए मेरी अगर,
तो आंखों से तेरी बनकर अश्क बहेंगे....।
हो जाएंगे दूर तुमसे इतना,
ढूंढने पर भी नज़र ना आएंगे....।
कर दे इस दिल की आरज़ू पूरी,
हम सारी जिंदगी तेरे ऋणी हो जाएंगे....।
इक बार जो बाहों में ले ले मुझको,
तो सारी जन्नत हम पा जाएंगे....।
गोद मै तेरी सर रखकर,
हम सदा के लिए फिर सो जाएंगे....।

हो जाएंगे दूर तुमसे इतना,
ढूंढने पर भी नज़र ना आएंगे....।

◆ ◆ ◆

कैसे कहें की हमें तूम से प्यार है

कैसे कहें की हमें तूम से प्यार है

कुछ यादें, दिल में खास होतीं हैं....।
बन्द आंखों में भी,
दिल के बेहद पास होतीं हैं....।
तुम्हें देख लगता है ऐसे,
जैसे तुम्हीं में मेरा सारा संसार है....।
अब तो तुम्हारे बिना लगता,
जैसे जीना भी दुश्वार है....।
पर कैसे कहें, की हमें तूम से प्यार है....।
आंखों में भी बसी,
एक तुम्हारी ही तस्वीर है....।
तुम्हीं से तो खिल उठी,
मेरी ज़िन्दगी की तकदीर है....।
तुम्हीं हो मेरी ज़िन्दगी,
तुम्हीं पर मुझको एतबार हैं....।
तुम्हीं पर तो करते,
हम अपनी जान निसार हैं....।
पर कैसे कहें, की हमें तूम से प्यार है....।
जिस दिन तुमसे बात ना हो,
दिल बड़ा बेचैन होता है....।
रहता है तन्हा-तन्हा,
और अकेले में ये रोता है....।
कटते नहीं हैं लम्हे,

इन आंखों को अब तुम्हारा ही इन्तज़ार है....।
तुम्हारे बिना लगता,
सुना-सुना सा ये संसार है....।
पर कैसे कहें, की हमें तूम से प्यार है....।
लगता है मुझको जैसे,
मेरा तुम्हारा जन्मों का रिश्ता है....।
मेरे लिए ही लाया तुम्हें,
इस दुनिया में कोई फरिश्ता है....।
तुम दूर ना हो जाओ मुझसे,
इस ख़याल से ही डरते हैं....।
तुम्हारी यादें ही,
मेरे जीने का आधार है....।
पर कैसे कहें, की हमें तूम से प्यार है....।
पर खुद पर है यकीन,
और हमारे प्यार पे है विश्वास....।
आएगा इक दिन ऐसा,
जब आओगे तुम मेरे पास....।
पूरी होगी ज़िन्दगी मेरी,
होगा वो दिन ज़िन्दगी का सबसे खास....।
आकर मेरे गले लगोगे,
और मेरे कानों में तुम मुझसे कहोगे....।
की हमें तुमसे प्यार है....,
हमें तुमसे प्यार है....,
हमें तुमसे प्यार है....।

◆ ◆ ◆

अपने लक्ष्य को ना छोड़ना

अपने लक्ष्य को ना छोड़ना

चंचल है जीवन पानी सा,
हर ओर ये बहता जाएगा....।
जीवन में ना हो लक्ष्य तो,
सागर सा बनकर ही रह जाएगा....।
नदियों सा पाएगा मोल ये,
जब लक्ष्य तू बनाएगा....।
आगे बढ़ अपनी राह पर,
हर चट्टानों को तुझे है तोड़ना....।
लड़खड़ाएं चाहे कदम कितने भी,
अपने लक्ष्य को ना छोड़ना....।
आसान नहीं राह कामयाबी की,
हर आग में जलना पड़ता है....।
चाहे कितने भी हों राह में शोले,
शोलों पे भी चलना पड़ता है....।
मुश्किलों का समंदर हो चाहे ज़िन्दगी,
पर हौसला ना छोड़ना....।
आंधी आए चाहे तूफ़ान आए,
हर मुश्किल का रूख तू मोड़ना....।
लड़खड़ाएं चाहे कदम कितने भी,
अपने लक्ष्य को ना छोड़ना....।
उड़ता है परिंदा गिर कर भी,
इक दिन ऊंचाइयों को वो छूता है....।

इक-इक तिनका जोड़ कर,
मुश्किलों से वो अपना घर पिरोता है....।
ना रुकता है ना थमता है,
ना सीखा मुश्किलों से मुंह मोड़ना....।
हौसला रख और आगे बढ़,
हर रास्ते को मंज़िल से तू जोड़ना....।
लड़खड़ाएं चाहे कदम कितने भी,
अपने लक्ष्य को ना छोड़ना....।
पाता है मंज़िल इक दिन वही,
जो हारने से नहीं डरता है....।
ज़िन्दगी की हर परिस्थितियों में,
जो हंसकर आगे बढ़ता है....।
जुनून है कुछ पाने का जिसमें,
हर मुश्किल से वो लड़ता है....।
बांधे हो तुझे गर कोई बेड़ियां,
हर जंजीरों को तू तोड़ना....।
लड़खड़ाएं चाहे कदम कितने भी,
अपने लक्ष्य को ना छोड़ना....।
है हुनर तुझमें भी कुछ करने का,
तू बस खुद को पहचान ले....।
नामुमकिन कुछ नहीं तेरे लिए,
तू बस इतना सा ठान ले....।
छाए अंधेरा चाहे राह में,
पर उम्मीद कभी ना छोड़ना....।
हिम्मत रख कर हौसले से,
तू अपनी राह पर ही दौड़ना....।
लड़खड़ाएं चाहे कदम कितने भी,
अपने लक्ष्य को ना छोड़ना....।

वक्त

वक्त

जिसे चाहती है ये सारी दुनिया,
पर वो किसी को चाहता नहीं....।
थामना चाहते हैं सब उसे,
पर वो किसी के हाथ आता नहीं....।
ना रुकता कभी, ना थमता कभी,
हर दम आगे बढ़ता जाता है....।
जुड़े हैं हर पल हम उससे,
"वक्त वो कहलाता है"....।
कोई तरसता इस के लिए,
और कोई इसे यूँही गवाता है....।
कभी आता बूरा बनकर,
तो कभी अच्छा बनकर भी आता है....।
अकल्पनीय खेल हैं बड़े इसके,
"वक्त वो कहलाता है"....।
साथ दे तो,
आसमान की तरक्की तक पहुंचा दे....।
रुठ जाए तो,
पल में ज़मी पर गिरा दे....।
कीमत समझो इसकी,
तो सोने सा बन जाता है....।
एक बार निकल जाए,
तो वापस कभी ना आता है....।

ये हर बार बदलता रहता है,
"वक्त वो कहलाता है"....।
साथ चलोगे जीवन में गर इसके,
तभी तूम मंज़िल पाओगे....।
और रह गए अगर पीछे,
तो हाथ ही मलते रह जाओगे....।
कोशिश करो तो साथ दे,
वरना यूंही चलता जाता है....।
"वक्त वो कहलाता है"....।
सोचता हूं जब भी में,
बस यही ख़याल मेरे मन में आए....।
दे सकें किसी को खुशियां,
बस इतना ही जीवन मुझको मिल जाए....।
ज़्यादा नहीं चाहिये मुझे,
बस वक्त इतना ही दिल चाहता है....।
खुशियां देख किसी के चेहरे पर,
मन को बड़ा ही सुकून आता है....।
ऐसा ही हो जीवन,
जो दिलों में यादें छोड़ जाता है....।
ना समझ सका कोई जिसको,
"वक्त वो कहलाता है"....।

◆ ◆ ◆

मेरा प्यार

मेरा प्यार

ऐ यार मेरे तू नहीं जानता,
कुछ तो तुझमें खास है....।
खो बैठे थे जो दिल हम,
वो तेरे ही तो पास है....।
मिलता है सुकून मुझको,
अब तेरे ही तो साथ है....।
तेरी बाहों में ही तो मिलता,
इक प्यारा सा एहसास है....।
होता हूं मैं जब पास तेरे,
कुछ और नज़र ना आता है....।
लगता जन्नत सा ये जहां,
दिल और कहीं सुकून ना पाता है....।
तेरे ही तो संग ये,
अब प्यार भरे सपने भी सजाता है....।
लगता है जैसे तेरा-मेरा,
जन्मों-जन्मों का नाता है....।
यादें तेरी मुझे सोने ना दें,
दिन-रात ये मुझे सताती हैं....।
जुदाई भी तेरी जीने ना दे,
मेरी नींदे भी वो उड़ाती हैं....।
खुशबू तेरे जिस्म की,
मेरी सांसों को महकाती हैं....।

देखें ना कभी तुझको तो,
ये सांसें भी थम जातीं हैं....।
प्यारी सी है सुरत तेरी,
जिसे देख के दिल खिल जाता है....।
पूरा लगता है ये जीवन,
जब भी तू पास आता है....।
आँखें तेरी सब कहती हैं,
फिर क्यों तू कहने से डरता है....।
दिल से दिल को मिलने दे,
और कह दे प्यार तू भी मुझसे करता है....।
तू ही तो है खुशियां मेरी,
तुझ से ही मेरा सारा संसार है....।
तू ही तो है मेरी गरिमा,
तुझ से ही तो मुझको प्यार है....।
करते हैं बेहद प्यार तुझे,
तेरे लिए तो मेरी जान निसार है....।
तू ही तो है ताकत मेरी,
तेरा प्यार ही मेरी ज़िंदगी का हथियार है....।
तुझसे हैं ज़िन्दगी में खुशियाँ मेरी,
तू ही तो मेरा प्यार है....।

◆ ◆ ◆

गरिमा (गौरव, शान)
DIGNITY

गरिमा (गौरव, शान)

अनमोल रतन कुछ दुनिया के,
हर चीज़ में ये तो बसते हैं....।
कोई गौरव कहे, कोई गरिमा कहे,
कोई शान कहे, और कोई मर्यादा कहे....।
होता ये बड़ा प्यारा सा,
कोई प्रेम कहे, कोई एहसास कहे....।
मिल जाए ये तो दुनिया खिले,
और बनके मिसाल हर दिल में रहे....।
जैसे पक्षियों का है गौरव उड़ने में,
और उड़कर ऊंचाईयों को छुने में....।
भँवरों का है गौरव फूलों में,
और फूलों का बाग में खिलने में....।
जैसे ईश्वर की है गरिमा भक्तों में,
और भक्तों की साधना करने में....।
दीपक की है गरिमा जलने में,
और जलकर रौशनी करने में....।
जैसे नदियों की शान है बहने में,
और बहकर सागर से मिलने में....।
बादल की शान बरसने में,
और बरस कर धरा से मिलने में....।
जैसे धरती की मर्यादा सागर तक,
और सागर की गगन को पाने में....।

दिल की मर्यादा धड़कन तक,
और धड़कन की प्यार जताने में....।
इन्सान ही ऐसा क्यों होता है,
हर भाव का अर्थ बदलता है....।
सपने दिखा के साथ चलने के,
दो कदम ही क्यों साथ चलता है....।
होते हैं कुछ लोग ऐसे भी,
जो प्यार से रिश्ते बनाते हैं....।
लूटाते हैं खुशियां अपनी हम पर,
और ज़िन्दगी भर साथ निभाते हैं....।
इन्तज़ार है मुझे बस उस पल का,
जब उनसे हम यह कह सकें....।
करें इज़हार उनसे अपने प्यार का,
और वो भी ये इकरार करें....।
हों एक दूजे की बाँहों में,
और हम उनके कानों में ये कहें....।
की तू ही तो है गरिमा मेरी,
तू ही मेरा अभिमान है....।
तुमसे हैं ज़िन्दगी में खुशियाँ,
तू ही मेरी ज़िन्दगी का सन्मान है....।

◆ ◆ ◆

मुझको अब, वो कभी ना पाएंगे
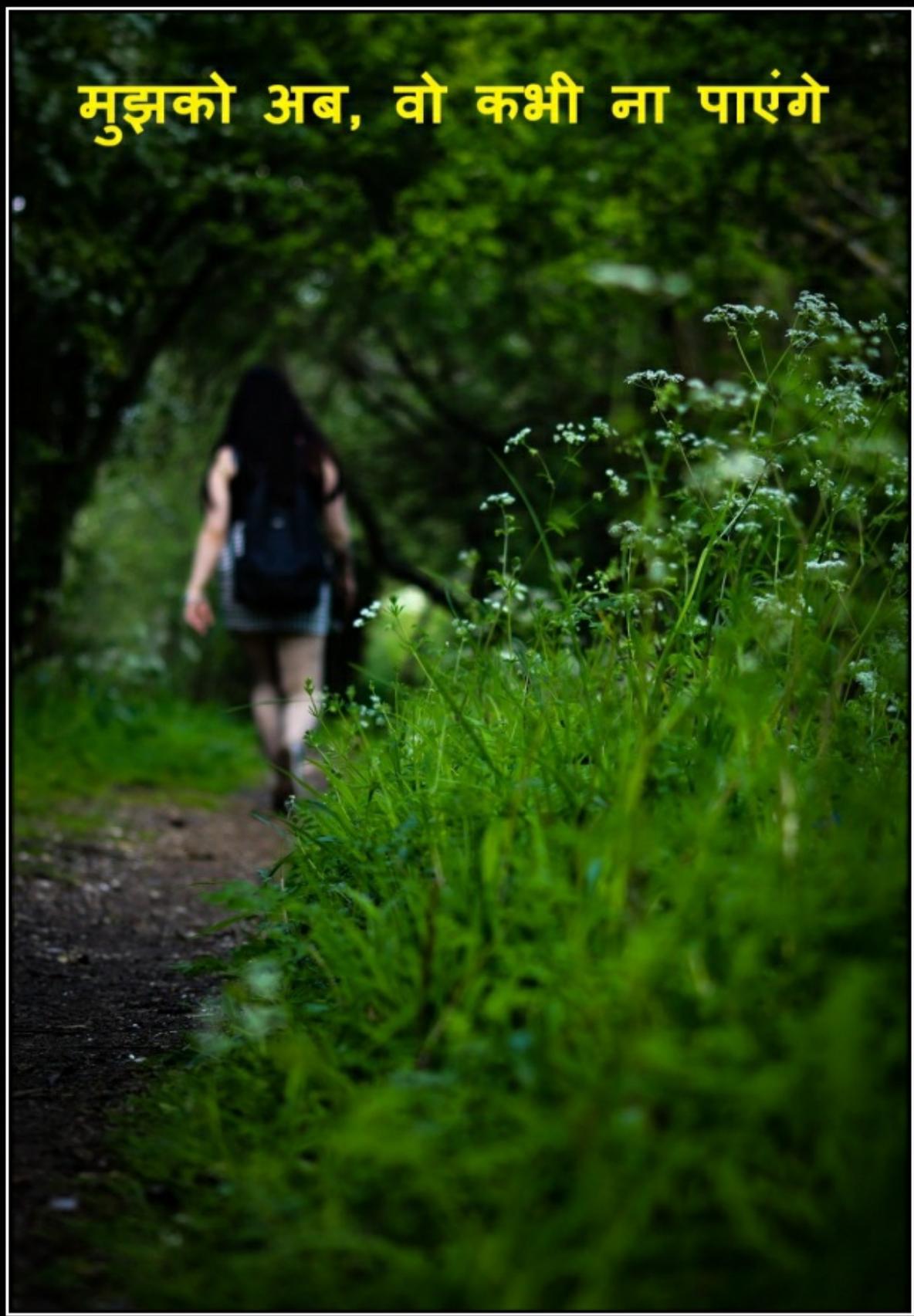
मुझको अब, वो कभी ना पाएंगे

चलते चलते ज़िन्दगी की राह में,
कुछ लोग यूँही मिल जाते हैं....।
करते हैं कई वादा भी वो,
और ज़िन्दगी में हमारी आते हैं....।
बंध जाते हैं फिर रिश्तों में भी,
पर साथ कहाँ निभाते हैं....।
रह जाते हैं जीवन में ऐसे,
यादों में बहुत सताते हैं....।
कहते थे हर पल साथ रहेंगे,
छोड़कर मुझे कभी ना जाएंगे....।
चाहेंगे खुद से ज्यादा मुझको,
हर रिश्तों को भी निभाएंगे....।
ठान लिया है अब हमने भी,
इस दिल में उन्हें कभी ना लाएंगे....।
मिन्नतें चाहे लाख करें खुदा से,
मुझको अब वो कभी ना पाएंगे....।
उनकी चाहत में हमने भी,
अपना सब कुछ खोया है....।
तड़प तड़प कर उनकी यादों में,
हमने बोहोत ही रोया है....।
छोड़ के अपने सारे सपने,
उनके सपनों को संजोया है....।

उनके हर अरमान को भी हमने,
खुशियों के धागे में पिरोया है....।
इस दुनिया को जाने क्या हुआ,
हर पल इन्सान बदल जाता है....।
अब तो मिलते बस लोग यहाँ,
सच्चा प्यार कहां मिल पाता है....।
दो पल का साथ मिलता हैं अब,
ज़िन्दगी भर का साथ कहाँ मिल पात है....।
डगमगाए हुए कदम मिलते हैं,
ईमान वाला दिल कहाँ मिल पाता है....।
ऐ खुदा कोई तो फरिश्ता भेज,
दिल जिस पर मेरा एतबार करे....।
जो प्यार करे बेहद ही मुझसे,
और ज़िन्दगी मेरी खुशियों से भरे....।
मैं भी जान लुटाऊं उस पर,
इस दिल में भी बस वही रहे....।
एक दूजे से जुड़ जाएं ऐसे,
बस साथ जिएं और साथ मरें....।

◆ ◆ ◆

देखो नव वर्ष हम सबके लिए,
खुशियां लेकर आया है
Happy...
Keep on
Smiling!
HAPPY NEW
YEAR

देखो नव वर्ष हम सबके लिए, खुशियां लेकर आया है

छोड़ो ग़म के दामन को,
एक नया सवेरा आया है।
करने हर ग़म दूर हमारे,
प्यारा मौसम भी छाया है।
पलकों पे हमारी सजाने को,
ढेरों सपने भी लाया है।
देखो नव वर्ष हम सबके लिए,
खुशियां लेकर आया है।
होंगे पूरे हर सपने वो,
जो आंखों में हमने सजाए हैं।
आएंगे पास हमारे वो,
जो याद बहुत ही आए हैं।
तारों से दामन सजाने को,
कोई फरिश्ता आया है।
देखो नव वर्ष हम सबके लिए,
खुशियां लेकर आया है।
खुशियों से महके सारा जीवन,
चाँद-तारों सा चमके नाम अपना।
रहे ज़िन्दगी रोशन हर दम,
आसमां से ऊंचा हो मान अपना।
पाना है मंज़िल को अपनी,

दिल में ये जज़्बा जगाया है।
देखो नव वर्ष हम सबके लिए,
खुशियां लेकर आया है।
हर ओर प्यार की खुशबू हो,
नफरत का ना हो नाम कहीं।
आओ बनाएं सब मिलकर,
एक प्यारा सा स्वर्ग यहीं।
आया है लेकर ढेरों अरमान,
और हौसले भी साथ लाया है।
देखो नव वर्ष हम सबके लिए,
खुशियां लेकर आया है।
आओ हम सब मिल जुल कर,
एक नया कदम बढ़ाते हैं।
ना हो जग में कोई अपराध,
कुछ ऐसा करके दिखलाते हैं।
जलाएं अच्छाई का दीप खुद में,
ये इक चिंगारी भी लाया है।
देखो नव वर्ष हम सबके लिए,
खुशियां लेकर आया है।

"HAPPY NEW YEAR"

◆ ◆ ◆